हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 01 - 07 june 2025

दो गज की दूरी अब भी जरूरी

पितांबरी
घी दिया
न गिरने वाली बाती
पितांबरी घी दिया जलाए,
बाती गिरने की चिंता भूल जाए !
गाय के शुद्ध घी से निर्मित दिये
दिया बिना कालिख छोड़े पूरी तरह जलता है
पूजा और धार्मिक विधी के लिए उपयुक्त
मोगरा और केवड़ा के सुगंध मे उपलब्ध
एक पॅक में ३५ दिये
Pitambari Products Pvt. Ltd.:
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 7674889939, East: 7752023380, 9867102999,
CRM: 022 - 6703 5564 / 5699 | Toll Free: 18001031299 | CIN: U52291MH1989PTC051314 | Visit: www.pitambari.com/shop

अनुक्रमणिका

फिर लौट आया कोरोना	डॉ. धीरज फूलमती सिंह	04
कोरोना: दूरी अब भी जरूरी	डॉ. शशांक द्विवेदी	05
हिंदू ताकतवर होंगे, तभी दुनिया परवाह करेगी- डॉ. मोहनजी भागवत	हरेश कुमार	07
मानसून से पहले बरसीं बदरियां	पंकज चतुर्वेदी	09
विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना भारत	विप्लव विकास	12
प्रधान मंत्री की राज्यों को सौगात	डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल	14
बदलाव की ओर सऊदी अरब	अल्केश चतुर्वेदी	16
आपके हाथों में आर्थिक प्रबंधन की चाबी	संकलन	17
वर्चुअल रियलिटी के साथ आगे बढ़ें	सुनीता माहेश्वरी	19
मूक तलाक : चुनौती एवं समाधान	प्रो. (डॉ.) शीला मिश्रा	20
अजीनोमोटो: स्वास्थ्य के लिए घातक	संकलन	22
समस्याओं से मुक्ति दिलाए तलवे की मालिश	डॉ. आशालता नायडू	24
मानसिक शांति की मुद्रा हाकिनी	डॉ.अनुराधा नरवणे	25
मुगलों पर भारी बुंदेलखंड का शेर छत्रसाल	संकलन	26
लघुकथा		27
अजब-गजब		28
समाचार		29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

संक्रमण

डॉ. धीरज फूलमती सिंह

कोरोना की भयावहता लोगों के स्मृति पटल से धुंधली भी नहीं हुई थी कि कोरोना ने फिर से देश में अपने पांव पसारना शुरू कर दिए हैं। हालांकि इस बार कोरोना से डरने की आवश्यकता नहीं है।

फिर लौट आया कोरोना

वर्ष 2020 और 2021 में करोना ने पूरी दुनिया में जो तांडव मचाया था, भला उसे कोई कैसे भूल सकता है। उस समय लॉक डाउन के कारण सड़कें सूनी हो गई थीं, लोग घर में ही बंद हो गए थे और चारों ओर मृत्यु अपना तांडव कर रही थी। ऑक्सीजन की कमी के कारण कई लोग असमय ही काल के गाल में समां गए थे। यह वह दौर था जब हर चेहरे पर मास्क लगा होता था, लोग भीड़-भाड़ में जाने से बचते थे, मौत के डर से किसी को छूने से भी लोग डरते थे। वर्तमान में एक बार फिर देश में कोरोना वायरस के मामले सामने आ रहे हैं। यहां तक कि महाराष्ट्र में 257 लोग इसकी चपेट में आ चुके हैं, परंतु कोरोना संक्रमण से आपको डरने की आवश्यकता नहीं है। इस बार कोरोना वायरस का यह वेरिएंट उतना घातक नहीं है जितना यह 2020-21 में था। आप सावधान रहें, पर चिंतित नहीं। आपने यदि बूस्टर डोज नहीं लिया है, किसी को डायबिटीज काफी समय से नियंत्रित नहीं है, कैंसर है, टीबी या किसी को एड्स या दमा है तो उन को थोड़े सावधान रहने की आवश्यकता है, किंतु चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार केवल 22% लोगों ने ही अब तक बूस्टर डोज लिया है। बाहर निकलते समय मास्क का उपयोग करें, भीड़-भाड़ में जाने से बचें। कोरोना का यह वेरिएंट उतना घातक नहीं है जितना जेंटा या डेल्टा वेरिएंट था।

यह अलग बात है कि महाराष्ट्र में पहुंचते ही इस वायरस ने ठाणे सिविल अस्पताल में एक व्यक्ति की मौत हो गई, परंतु जांच से पता चला है कि इस व्यक्ति को छः वर्ष की आयु से डायबिटीज वन की समस्या थी। जिसके कारण उसकी किडनी भी प्रभावित हो गई थी। हालांकि मुम्बई में चार मरीज और भी मिले हैं जिनकी कोरोना से मृत्यु हो गई, पर इन सब के पीछे मुख्य रूप से उनकी पुरानी असाध्य बीमारियां ही हैं। इन चारों में एक को पुरानी टीबी, दो को कैंसर और एक को फेफड़ों का इंफेक्शन था।

आप सोचते हैं कि कोरोना वैक्सीन लेने से आप पूरी तरह सुरक्षित हैं तो यह आपकी भूल है। वैक्सीन लेने के बाद भी आप को करोना होगा पर यह लाइलाज नहीं होगा, इसका उपचार हो जाएगा।

आप यदि सोचते हैं कि एक दिन इस दुनिया से कोरोना वायरस समाप्त हो जाएगा तो भी आप गलत हैं क्योंकि यह कभी समाप्त नहीं होगा। यह बार-बार, हर वर्ष लौट कर आएगा, अपने पहले वाले वेरिएंट से कमजोर होकर आएगा! अशक्त होगा, शक्तिहीन होगा।

***

उपचार

डॉ. शशांक द्विवेदी

देश में कोरोना के मामलों में लगातार वृद्धि देखी जा रही है। कोरोना से बचना आवश्यक है, पर घबराना नहीं है। जी हां! क्योंकि कोरोना के नए वैरियंट घातक नहीं है। जैसे बीमार होने पर या सर्दी-खांसी होने पर जिन चीजों का ध्यान रखते हैं, वैसे ही कोरोना होने पर सावधानीपूर्वक उपचार करने की आवश्यकता है।

कोरोना दूरी अब भी जरूरी

वर्तमान समय में भारत में कोविड-19 के मामलों में फिर से वृद्धि देखी जा रही है। जिसका मुख्य कारण नए वैरिएंट्स एनबी.1.8.1 और एलएफ.7 का प्रसार है। ये दोनों वैरिएंट्स जेएन.1 के उप-प्रकार हैं, जो देश में फैल रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि करोना के इस नए वैरिएंट से बचें न कि डरे या घबराएं।

नए वैरिएंट्स का परिचय

एनबी.1.8.1 को पहली बार अप्रैल 2025 में तमिलनाडु में और एलएफ.7 को मई 2025 में गुजरात में पहचाना गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इन दोनों वैरिएंट को निगरानी की श्रेणी में रखा है।

लक्षण और प्रभाव

इन नए वैरिएंट्स के लक्षणों में गले में खराश, खांसी, बहती नाक, हल्का बुखार, थकान, मांसपेशियों में दर्द, सिरदर्द, चक्कर आना, ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई, मतली, भूख में कमी और पेट सम्बंधी समस्याएं शामिल हैं। देशभर में सक्रिय मामलों की संख्या 1,010 तक पहुंच गई है। केरल, महाराष्ट्र, दिल्ली और गुजरात जैसे राज्यों में तेजी से वृद्धि देखी जा रही है। दिल्ली की मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता ने आश्वासन दिया है कि सरकार स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है। अस्पतालों में बेड, दवाइयां और ऑक्सीजन की पर्याप्त व्यवस्था की जा रही है जिससे करोना से संक्रमित मरीजों का आसानी से उपचार किया जा सके।

सावधानियां और सुझाव

करोना से बचने के लिए लोगों को सावधान रहने की जरुरत है। संक्रमित व्यक्तियों से दूरी भी जरुरी है।

मास्क पहनना: सार्वजनिक स्थानों पर मास्क का उपयोग करें।

सामाजिक दूरी: भीड़भाड़ वाले स्थानों से बचें और सामाजिक दूरी बनाए रखें।

हाथों की स्वच्छता: नियमित रूप से हाथ धोएं या सैनिटाइजर का उपयोग करें।

टीकाकरण: बूस्टर डोज लेने पर विचार करें, विशेष रूप से उच्च जोखिम वाले लोगों के लिए।

भारत में कोरोना के नए वैरिएंट्स एनबी.1.8.1 और एलएफ.7 के कारण मामलों में वृद्धि देखी जा रही है। हालांकि अधिकांश मामलों में लक्षण हल्के हैं, परंतु सतर्कता और सावधानी आवश्यक है। सरकार और स्वास्थ्य विभाग स्थिति

- ❊ महाराष्ट्र में मई 2025 के अंत तक कोरोना–19 मामलों में वृद्धि देखी गई है, हालांकि अधिकांश संक्रमण हल्के हैं।
- ❊ महाराष्ट्र में कोरोना की वर्तमान स्थिति
- ❊ कुल मामलें (जनवरी 2025 से): 597
- ❊ सक्रिय मामलें (29 मई 2025 तक): 425
- ❊ ठीक हुए मरीज: 165
- ❊ मृत्यु संख्या: 07 (इनमें से 06 मरीजों को पहले से गम्भीर बीमारियां थीं)।
- ❊ मुम्बई और पुणे जैसे शहरी क्षेत्रों में अधिकांश नए मामले सामने आए हैं। मुम्बई में मई में अब तक 346 संक्रमण दर्ज किए गए हैं, जो कि पिछले महीनों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है।

पर दृष्टि रखे हुए हैं और आवश्यक कदम उठा रहे हैं।

राज्य सरकार की तैयारियां

महाराष्ट्र सरकार कोविड–19 की सम्भावित नई लहर से निपटने के लिए कई कदम उठाए हैं।

जांच और स्क्रीनिंग: वसई–विरार नगर निगम ने व्यापक स्क्रीनिंग अभियान शुरू किया है, जिसमें पिछले सप्ताह 5,070 लोगों की जांच की गई।

स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार: विरार के जीवदानी अस्पताल में कोरोना के मरीजों के लिए 25 बेड वाला वार्ड तैयार किया गया है, और ऑक्सीजन आपूर्ति सुनिश्चित की गई है।

सार्वजनिक जागरूकता: सरकार ने नागरिकों से मास्क पहनने, हाथ धोने और भीड़–भाड़ से बचने की सलाह दी है। विशेष रूप से बुजुर्गों, बच्चों और पहले से बीमार लोगों को अतिरिक्त सावधानी बरतने की अपील की गई है। हालांकि महाराष्ट्र में कोरोना के मामलों में वृद्धि हो रही है, परंतु अधिकांश संक्रमण हल्के हैं और अस्पताल में भर्ती की आवश्यकता नहीं है। राज्य सरकार स्थिति पर दृष्टि रखे हुए है और आवश्यक तैयारियां कर रही है। नागरिकों से अनुरोध है कि वे सतर्क रहें, स्वास्थ्य निर्देशों का पालन करें और किसी भी लक्षण के प्रकट होने पर तुरंत जांच कराएं।

***

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
"We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

वक्तव्य

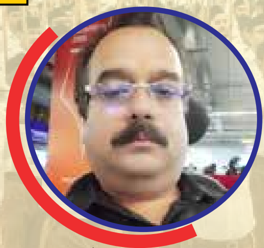

हरेश कुमार

संघ शताब्दी वर्ष के निमित्त दिए गए साक्षात्कार में रा. स्व. संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहनजी भागवत ने कहा कि हिंदुओं को ताकतवर होने की आवश्यकता है। यदि हिंदू मजबूत होंगे, सशक्त होंगे तभी भारत का मान-सम्मान दुनिया में बढ़ेगा।

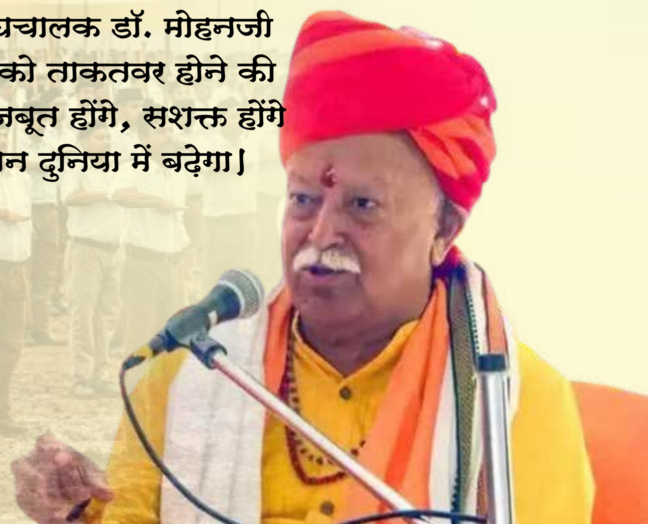

हिंदू ताकतवर होंगे, तभी दुनिया परवाह करेगी - डॉ. मोहनजी भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहनजी भागवत ने अपने साक्षात्कार में कहा कि भारत की एकता हिंदुओं की सुरक्षा की गारंटी है। भारत के हिंदू मजबूत होंगे, तो दुनिया भर में फैले हिंदुओं को ताकत मिलेगी। हिंदू समाज और भारत एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हिंदू सशक्त होगा, तभी भारत का मान-सम्मान दुनिया में बढ़ेगा।

पू. सरसंघचालक डॉ. मोहनजी भागवत ने पड़ोसी देश पाकिस्तान और बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर मानवाधिकार संगठनों की चुप्पी पर गम्भीर प्रश्न उठाए। उन्होंने बातचीत के दौरान प्रमुखता से इस बात पर जोर दिया कि जब तक हिंदू समाज खुद मजबूत नहीं होगा, तब तक दुनिया में कोई भी उनके बारे में टेंशन नहीं लेगा।

वसुधैव कुटुंबकम् हमारी पहचान है

पू. सरसंघचालक डॉ. मोहनजी भागवत ने कहा कि हम दुनिया पर अपनी धौंस जमाने के लिए ताकत नहीं चाहते, बल्कि हम सुनिश्चित करना चाहते हैं कि दुनिया भर में शांति हो। सभी धर्मों के मानने वाले एक-दूसरे के साथ परस्पर शांति और सह-अस्तित्व के साथ रहें। एक-दूसरे का सम्मान करें। प्राचीन काल से वसुधैव कुटुंबकम् का हम नारा देते आ रहे हैं। सारा संसार ही हमारा कुटुम्ब यानी परिवार है।

उन्होंने आगे कहा, हमारी सीमाओं पर अशांति और दुष्ट ताकतों की क्रियाकलापों को देखते हुए हमें हर हाल में मजबूत होना ही होगा। इसके अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं है। उन्होंने साफ और स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय सुरक्षा की जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं, बल्कि यह समाज की भी जिम्मेदारी है। डॉ. मोहनजी भागवत ने हिंदू समाज को एकजुट और मजबूत होने का आह्वान करते हुए कहा कि आपको अपनी रक्षा खुद करनी होगी। आप किसी दूसरे देश के भरोसे नहीं रह सकते कि वो हमारी रक्षा करेगा।

डॉ. मोहनजी भागवत ने देश की सुरक्षा को सिर्फ सीमाओं और सेना तक सीमित न बताते हुए इसे सभ्यता और मानसिकता से जोड़ा। उन्होंने भारत के बंटवारे के बाद से पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिंदुओं और सिखों के साथ अमानवीय व्यवहार और अत्याचार और हाल के दिनों में बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ प्रताड़ना, बहू-बेटियों के साथ रेप, मंदिरों को जलाना, नौकरी-रोजगार से लेकर हर तरफ से संकट पर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि हिंदू अपने अधिकारों के लिए वहां उठ खड़े हुए हैं, वे भागे नहीं हैं।

इन्होंने बांग्लादेश की प्रधान मंत्री शेख हसीना के सत्ता परिवर्तन के बाद से हिंदुओं पर हुए अमानवीय अत्याचार को लेकर अपनी

पीड़ा व्यक्त की। उन्होंने आगे कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार के विरुद्ध भारत में अभूतपूर्व गुस्सा दिखा। बांग्लादेश में रह रहे हिंदू वहां से भागे नहीं, बल्कि वहां रहकर अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं। हिंदू समाज की आंतरिक ताकत पहले से कई गुना बढ़ी है। यदि भारत का हिंदू समाज मजबूत होता है, तो अपने आप ही दुनिया भर में हिंदुओं को ताकत मिलेगी। संघ की शाखाओं के माध्यम से देशभर में यह काम चल रहा है, किंतु अभी पूरा नहीं हुआ है। धीरे-धीरे, पर निश्चित रूप से, वह स्थिति आ रही है। इस बार बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध जिस तरह से गुस्सा जताया गया है, वह पहले कभी नहीं देखा गया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि संघ हिंदुओं की सहायता के लिए हरसम्भव प्रयास करेगा। दुनिया में जहां कहीं भी हिंदू हैं उनके लिए हम अंतरराष्ट्रीय नियमों का पालन करते हुए सबकुछ करेंगे। संघ का गठन ही इसी के लिए हुआ है।

लोगों को जाति और पंथ की सोच से ऊपर उठने की आवश्यकता

डॉ. मोहनजी भागवत ने कहा कि सनातन धर्म के सच्चे सार को संरक्षित करने के लिए समाज के सभी लोगों को जाति और पंथ के विभाजन से ऊपर उठने की आवश्यकता है। उन्होंने दुनिया में बुरी ताकतों से लड़ने के लिए आंतरिक संवाद, ताकत और एकता की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। हिंदू धर्म के बारे में विशेष रूप से पूछे जाने पर उन्होंने कहा, सम्पूर्ण हिंदू समाज को एकजुट करना और भारत को वैभव के शिखर पर ले जाना और अंततः इस परिवर्तन को पूरे विश्व में फैलाना। डॉ. हेडगेवार ने 1920 में ही इसकी कल्पना कर ली थी। उन्होंने कांग्रेस से यह घोषणा करने का आग्रह किया कि पूर्ण स्वतंत्रता या पूर्ण स्वराज्य, हमारा लक्ष्य होना चाहिए और एक स्वतंत्र भारत को अन्य देशों को पूंजीवादी बंधन से मुक्त करने में सहायता करनी चाहिए।

'हिंदू' शब्द का मतलब बहुत बड़ा है

डॉ. मोहनजी भागवत ने कहा कि 'हिंदू' शब्द का मतलब बहुत बड़ा है। इसमें समय के हिसाब से बदलाव करने की आवश्यकता है। संघ की प्रार्थना में यह भी कहा गया है, 'मैं संघ का एक हिस्सा हूं' इसका मतलब है कि मैं संघ को बनाने में सहायता करता हूं। इसलिए किसी भी बात पर अलग-अलग राय रखने की पूरी स्वतंत्रता है। जब सब लोग मिलकर किसी बात पर सहमत हो जाते हैं, तो हर कोई अपनी राय को भूलकर उस निर्णय को मान लेता है। फिर सब लोग मिलकर काम करते हैं और एक ही दिशा में चलते हैं।

***

वर्षा ऋतु

पंकज चतुर्वेदी

मानसून भारत की सामाजिक, आर्थिक समृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारक है। मानसून चाहे वह जल्दी हो या देर से, दूरगामी परिणाम पैदा कर सकता है, जिसका असर कृषि, ग्रामीण आजीविका, समग्र अर्थव्यवस्था और यहां तक कि सामाजिक स्थिरता पर भी पड़ सकता है।

कहते हैं जब जेठ तपता है तो आषाढ़ बरसता है और सावन-भादों में झड़ी लगती है। इस वर्ष जब नौतपा में भारतवर्ष को खूब गरम होना था, बरसात की ऐसी झड़ी लगी, जैसे सावन हो। मौसम वैज्ञानिक विचार करते रहे कि यह मानसून-पूर्व बरसात है, पर चुपके से कर्नाटक, महाराष्ट्र और केरल में मानसून की बदलियां जल्दी ही बरस गईं।

हमारे देश का अर्थतंत्र और सामाजिक स्थिति मानसून पर निर्भर है। यदि जलवायु परिवर्तन के कारण इस तरह मानसून अनियमित होता रहा तो देश का समीकरण गड़बड़ा जाएगा। इस वर्ष केरल में मानसून 24 मई, 2025 को आ गया, जबकि सामान्य आगमन तिथि 1 जून है। उससे 8 दिन पहले। मुम्बई और कर्नाटक में भी मानसून समय से काफी पहले आ गया है। मुम्बई में मानसून की सामान्य आगमन तिथि 07-11 जून है जबकि आ गया 26 मई को। कर्नाटक में 1-5 जून की सामान्य तिथि है जो समय से पहले आ गया।

भारत में केवल तीन ही किस्म की जलवायु है - मानसून, मानसून-पूर्व और मानसून-पश्चात। तभी भारत की जलवायु को मानसूनी जलवायु कहा जाता है। खेती-हरियाली और वर्ष भर के जल की जुगाड़ इसी बरसात पर निर्भर है।

इस वर्ष बहुत पहले और भयंकर बरसात का प्रमुख कारण समुद्री सतह के तापमान (SST) में वृद्धि माना जा रहा है। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में समुद्री सतह का तापमान सामान्य से अधिक हो जाने से मानसून जल्दी शुरू हो सकता है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण महासागरों का तापमान बढ़ रहा है, जिससे वायुमंडल में नमी बढ़ती है और बादल जल्दी बनते हैं। जैसे-जैसे पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ता है, वातावरण में नमी की मात्रा भी बढ़ती है। अनुमान है कि प्रति डिग्री सेल्सियस तापमान बढ़ने पर वातावरण में 6 से 8% नमी बढ़ जाती है। यह बढ़ी हुई नमी मानसून की हवाओं को तेजी से

मानसून से पहले बरसीं बदरियां

सक्रिय कर सकती है।

वैश्विक तापमान बढ़ने के चलते यूरेशिया और हिमालय में बर्फ का कम होना और तेजी से पिघलने ने भी जल्दी बरसात को बुलावा दिया है। बर्फ की कमी से जमीन जल्दी गर्म हो जाती है, जिससे कम दबाव का क्षेत्र मजबूत होता है, जो मानसूनी हवाओं को अपनी ओर खींचता है और मानसून को जल्दी ला सकता है।

जल्दी मानसून के कुछ वैश्विक कारक भी हैं। एल नीनों की तरह इनमें से एक मैडेन-जूलियन ऑसिलेशन हिंद महासागर में बादलों और बारिश को प्रभावित करने वाली एक वैश्विक मौसमी घटना है। इसके अनुकूल चरण (चरण-3 और चरण-4 की शुरुआती गतिविधि) मानसूनी हवाओं के लिए अनुकूल परिस्थितियां बना सकते हैं और मानसून को जल्दी ला सकते हैं। एक अन्य कारण वैश्विक कारक सोमाली जेट है। मॉरीशस और मेडागास्कर के पास से निकलने वाली एक प्रमुख निम्न-स्तरीय पवन धारा मई 2025 में तीव्र हो गई। यह जेट अरब सागर के पार केरल, कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र सहित भारत के पश्चिमी तट पर नमी से भरी हवा पहुंचाता है। इस वर्ष इसकी असामान्य ताकत मानवजनित प्रभावों के कारण प्रतीत होती है। इंडियन ओशन डायपोल (खजऊ) का पॉजिटिव होना भी एक बड़ा कारण है। यह अरब सागर में नमी के जमाव को बढ़ाता है, जिससे मानसूनी हवाएं तेज होती हैं और मानसून के जल्दी आने का कारण भी बन सकता है।

अब जल्दी बरसात आने से महानगरों की तैयारी अधूरी रही और चेन्नई, मुम्बई, बैंगलुरु और दिल्ली जैसे शहर डूब गए। सबसे बड़ा संकट तो किसान का है। किसान आज भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। किसानों को हमेशा मानसून के एक निश्चित समय पर आने की आशा होती है। यदि यह जल्दी आ जाता है, तो वे खेत तैयार करने, बुवाई करने या सही फसल का चुनाव करने के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं। यदि बुवाई के बाद अचानक भारी बारिश होती है, तो कोमल पौधे (अंकुरित फसल) नष्ट हो सकते हैं या मिट्टी की ऊपरी परत कठोर हो सकती है, जिससे पौधों के बढ़ने में बाधा आती है। यदि कोई फसल पहले से ही पक चुकी है या कटाई के करीब है और मानसून जल्दी आ जाता है, तो भारी बारिश से फसलें खराब हो सकती हैं। उनमें फंगस लग सकता है या वे खेत में ही सड़ सकती हैं। कुछ फसलों को एक निश्चित शुष्क अवधि की आवश्यकता होती है और जल्दी मानसून से उनका सामान्य फसल चक्र बाधित हो सकता है।

महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में पिछले कुछ दिनों से जारी बारिश ने बड़े पैमाने पर फसलों को प्रभावित किया है। राज्य में समय से पहले मानसून के सक्रिय होने से किसानों की चिंताएं और बढ़ गई हैं। आम, अनार, नींबू जैसी बागवानी फसलों के साथ-साथ बाजरा, मक्का की फसल भी प्रभावित हुई है। बारिश की सबसे ज्यादा मार प्याज किसानों पर पड़ी है। इसके अलावा सोयाबीन और उड़द एवं मूंग जैसी फसलों के प्रभावित होने की भी आशंका जताई जा रही है। हालांकि सरकार ने तत्काल फसलों का पंचनामा करके हानि की भरपाई करने के निर्देश दिए हैं।

मई महीने में हो रही बारिश के कारण 29,483 हेक्टेयर फसलें, विशेषतौर पर आम, अनार, संतरा, मीठा नींबू और सब्जियों जैसी बागवानी फसलों को नुकसान पहुंचा है। नासिक में सबसे ज्यादा हानि हुई है। भारी बारिश के कारण बागवानी के अलावा बाजरा, मक्का, जैसी फसलों को भी हानि पहुंची है। किसानों को इस बारिश ने परेशान कर दिया है, विशेषकर मराठवाड़ा और विदर्भ के ऐसे किसान जो आगामी खरीफ सीजन के लिए अपने खेतों को तैयार करने में जुटे थे।

किसानों के अनुसार सोयाबीन के लिए जुताई और कतार बनाने के मामले में खेत की तैयारी अभी पूरी नहीं हुई है। बारिश ने काम रोक दिया है। बुवाई का काम खेत में पर्याप्त नमी होने के बाद भी शुरू होता है। मूंग और उड़द जैसी फसलों के लिए बुवाई का समय कम होता है, जबकि कपास और सोयाबीन जैसी फसलों के लिए यह समय लम्बा होता है। किसानों को चिंता है कि कहीं यह बारिश बुवाई के दौरान मुश्किल न बन जाए।

कोंकण, नासिक, पुणे, कोल्हापुर, छत्रपति संभाजीनगर, लातूर, अमरावती और नागपुर में प्याज उत्पादक क्षेत्रों में 6 मई से ही बेमौसम बारिश हो रही थी और अब मानसूनी बारिश शुरु हो गई है। जिसमें सबसे ज्यादा प्याज की फसल को हानि हुई है। महाराष्ट्र राज्य प्याज उत्पादक किसान संघ के संस्थापक अध्यक्ष भरत दिघोले ने बताया कि बारिश में हजारों एकड़ में लगी प्याज की फसल बर्बाद हो गई है। जल्दी मानसून का आना मौसम के पैटर्न में एक व्यवधान का संकेत हो सकता है, जो कृषि से लेकर सार्वजनिक स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे तक कई क्षेत्रों में अनपेक्षित और नकारात्मक परिणाम पैदा कर सकता है।

***

50+ YEARS OF MOMENTUM

अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

आपले घरकुलाचे स्वप्न साकार करा आमच्या सोबतीने

गृह कर्ज

व्याजदर:
८० लाखांपर्यंत - ८.२०%*

किमान प्रक्रिया शल्क व जलद प्रोसेसिंग *

अटी व शर्ती लागू*

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

भारत का विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना मात्र एक आर्थिक उपलब्धि नहीं बल्कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'न्यू इंडिया' के उत्थान की एक ऐतिहासिक गाथा है। अब भारत केवल एक विकल्प नहीं है, यह दुनिया के लिए दिशा दिखाने वाला नेतृत्वकर्ता बन चुका है।

विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना भारत

भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था की दौड़ में एक ऐतिहासिक छलांग लगाते हुए जापान को पीछे छोड़ दिया है और अब दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। यह केवल एक सांख्यिकीय उपलब्धि नहीं बल्कि भारत सरकार की दूरदर्शी आर्थिक रणनीतियों और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व का सशक्त प्रमाण है। यह क्षण भारत के लिए ऐतिहासिक और गर्व का विषय है। यह एक संकेत है कि अब भारत केवल विकासशील देश नहीं बल्कि वैश्विक आर्थिक महाशक्ति का केंद्र बन रहा है।

2014 के बाद आर्थिक नीतियों में बड़ा परिवर्तन

2014 से पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था अनेक चुनौतियों से जूझ रही थी। जिनमें नीति-निर्णय में अस्पष्टता, भ्रष्टाचार के आरोप और वैश्विक निवेशकों में भारत के प्रति असमंजस का भाव आदि शामिल था। नरेंद्र मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद देश में एक आर्थिक क्रांति की शुरुआत हुई। 'मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस' की नीति पर चलते हुए सरकार ने न केवल प्रणालीगत भ्रष्टाचार को चुनौती दी, बल्कि Ease of Doing Business को बढ़ावा देने वाले अनेक सुधार लागू किए।

विप्लव विकास

जीएसटी, जो वर्षों से अटका पड़ा था, 'एक देश-एक कर' व्यवस्था के रूप में लागू हुआ। इससे व्यापार सुगम हुआ, कर संग्रहण पारदर्शी बना और छोटे कारोबारियों को सशक्त बनाया गया। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों ने देश की अर्थव्यवस्था को जमीनी स्तर से नई ऊर्जा दी।

डिजिटल इंडिया: आर्थिक समावेशन की रीढ़

भारत की इस आर्थिक सफलता की सबसे बड़ी बुनियाद उसकी डिजिटल क्रांति रही है। UPI (Unified Payments Interface) ने न केवल डिजिटल ट्रांजैक्शन को आम जनजीवन का

हिस्सा बना दिया बल्कि गांवों-कस्बों में भी वित्तीय समावेशन सुनिश्चित किया। जनधन योजना, आधार और मोबाइल लिंकिंग की त्रिमूर्ति ने करोड़ों भारतीयों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा। जहां पश्चिमी देश अब भी डिजिटल भुगतान के लिए प्लास्टिक कार्ड्स पर निर्भर हैं, वहीं भारत ट्ठ कोड स्कैन कर सब्जी भी खरीद रहा है और गोल-गप्पे भी खा रहा है। यह परिवर्तन केवल तकनीकी नहीं, आर्थिक क्रांति है, जिसने गरीब से गरीब को भी आर्थिक प्रवाह का हिस्सा बना दिया है।

वैश्विक मंच पर बढ़ती प्रतिष्ठा

आइएमएफ, विश्व बैंक और अनेक वैश्विक एजेंसियां अब भारत को वैश्विक विकास का इंजन मानती हैं। 2024 में भारत की जी20 अध्यक्षता इस बात का प्रमाण रही कि भारत न केवल अपनी आंतरिक चुनौतियों से जूझ रहा है बल्कि विश्व को दिशा देने की स्थिति में भी पहुंच चुका है। अमेरिका और यूरोप में जहां मंदी की आहटें सुनाई देती हैं, वहीं भारत में जीडीपी की विकास दर 6-7% के आसपास बनी हुई है, यह एक असाधारण उपलब्धि है। भारत अब न केवल सॉफ्टवेयर और सेवा क्षेत्र में अग्रणी है बल्कि उद्योग, डिफेंस प्रोडक्शन, सेमीकंडक्टर, ग्रीन एनर्जी और इलेक्ट्रिक व्हीकल्स जैसे क्षेत्रों में भी नेतृत्व कर रहा है।

युवाओं और स्टार्टअप्स की भूमिका

भारत विश्व की सबसे बड़ी युवा जनसंख्या वाला देश है। 2021 के आंकड़ों के अनुसार देश की कुल जनसंख्या का लगभग 65% हिस्सा 35 वर्ष से कम आयु का है। यह विशाल जनसांख्यिकीय लाभ भारत के आर्थिक भविष्य का प्रमुख स्तम्भ है। इस ऊर्जा को उत्पादक शक्ति में बदलने के लिए सरकार ने कई रणनीतिक कदम उठाए हैं। जिनमें स्किल इंडिया मिशन (2015), डिजिटल स्किलिंग इनिशिएटिव, नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 और अटल इनोवेशन मिशन जैसी योजनाएं युवाओं को न केवल रोजगार पाने योग्य बना रही हैं बल्कि उन्हें रोजगार देने वाला भी बना रही हैं। इसका सीधा प्रभाव भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम पर पड़ा है। उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) के अनुसार मई 2024 तक भारत में एक लाख से अधिक स्टार्टअप्स पंजीकृत हो चुके हैं। इनमें से 100 से अधिक यूनिकॉर्न (1 अरब डॉलर से अधिक मूल्यांकन वाली कम्पनियां) बन चुके हैं, जिनका योगदान भारतीय अर्थव्यवस्था और वैश्विक पहचान को नई ऊंचाइयां दे रहा है। भारत इस समय अमेरिका और चीन के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है।

भारत के स्टार्टअप्स की सबसे बड़ी ताकत इसकी बूटस्ट्रैप संस्कृति है, जहां युवा सीमित संसाधनों में नवाचार, टेक्नोलॉजी और ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण के दम पर सफल कम्पनियां खड़ी कर रहे हैं।

सरकार ने इस उभरती उद्यमिता को समर्थन देने के लिए कई व्यावहारिक कदम उठाए हैं।

स्टार्टअप इंडिया योजना के अंतर्गत 80,000 से अधिक स्टार्टअप्स को DPIIT द्वारा मान्यता मिली है।

स्टार्टअप्स को तीन वर्ष तक टैक्स में छूट, सरल कम्पनी रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया और स्वयं-प्रमाणन जैसी सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

Fund of Funds for Startups (FFS) योजना के अंतर्गत अब तक 7,900 करोड़ से अधिक की प्रतिबद्धता दी जा चुकी है।

Startup India Seed Fund Scheme के अंतर्गत 945 करोड़ से अधिक की राशि 126 इन्क्यूबेटर्स के माध्यम से 900+ स्टार्टअप्स को प्रदान की गई है।

भारत में स्टार्टअप अब केवल तकनीकी कम्पनियां नहीं रह गई हैं बल्कि एग्रो-टेक, हेल्थटेक, क्लीनटेक, एजु-टेक और डीपटेक जैसे क्षेत्रों में भी युवाओं ने धुआंधार प्रवेश किया है।

इस परिवर्तन का सार यह है कि भारत के युवा अब जॉब सीकर नहीं, जॉब क्रिएटर बन रहे हैं। यह आत्मनिर्भर भारत की नींव है, जहां हर कोना नवाचार से जुड़ रहा है और हर युवा 'न्यू इंडिया' का निर्माता बन रहा है।

कोविड महामारी के दौरान जब दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाएं चरमरा गईं, भारत ने अपने निधियों, टेक्नोलॉजी और जनशक्ति के सहारे न केवल स्वास्थ्य संकट को नियंत्रित किया बल्कि आर्थिक गतिविधियों को भी पुनः सक्रिय किया। आत्मनिर्भर भारत अभियान और राहत पैकेजों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित किया। अब जबकि अन्य देशों में अभी भी आर्थिक अस्थिरता बनी हुई है, भारत ने लगातार तिमाहियों में जीडीपी ग्रोथ दर्शाकर वैश्विक विशेषज्ञों को चौंका दिया।

भारत आर्थिक प्रगति के दौर में है, परंतु सरकार यह स्वीकार करती है कि चुनौतियां अब भी उपस्थित हैं, जैसे बेरोजगारी, क्षेत्रीय असमानता, वैश्विक भू-राजनीतिक अस्थिरता और कौशल अनुरूप रोजगार की कमी। इनसे निपटने के लिए भारत सरकार ने बहुस्तरीय रणनीतियां अपनाई हैं।

***

योजनाएं

प्रधान मंत्री की राज्यों को सौगात

इन दिनों प्रधान मंत्री विभिन्न राज्यों का दौरा कर जनता व राज्यों को कई सौगातें दे रहे हैं। इस दौरान उन्होंने कई हजार करोड़ की विकास योजनाओं की आधारशिला रखी। जिससे यह संकेत मिलता है कि केंद्र सरकार राष्ट्र के समग्र विकास के प्रति दृढ़ संकल्पित हैं।

डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने विगत सप्ताह देश के 6 राज्यों गुजरात, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश का दौरा कर न केवल विकास की गति को एक नई दिशा दीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और कूटनीतिक मजबूती का भी सशक्त संदेश दिया। 6 दिन में 6 राज्यों की यात्रा के दौरान उन्होंने कई जनसभाएं और रोडशो किए, जिनमें भारी जनसमर्थन देखने को मिला। इस दौरे के दौरान प्रधान मंत्री ने हजारों करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इनमें बुनियादी ढांचे, रेलवे, ऊर्जा, शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र की अनेक योजनाएं शामिल रहीं, जो इन राज्यों की सामाजिक–आर्थिक प्रगति को नई ऊर्जा देंगी। इस दौरे की विशेष बात यह रही कि वह विकास के एजेंडे को लेकर जनता के बीच पहुंचे, जिससे यह स्पष्ट संकेत मिला कि सरकार 2024 के बाद भी अपने संकल्पों को लेकर पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

वहीं, प्रधान मंत्री मोदी पहली बार 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद सार्वजनिक रूप से लोगों से भेंट कीं। उन्होंने अपने भाषणों में पाकिस्तान और आतंकवाद के खिलाफ आक्रामक रुप अपनाते हुए यह स्पष्ट किया कि भारत अब हर आतंकी गतिविधियों का निर्णायक जवाब देगा।

गुजरात के भुज से अपने 6 राज्यों के दौरे की शुरुआत करते हुए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ भारत की नीति को एक बार फिर दोहराया। भुज की जनसभा में बोलते हुए उन्होंने सीधे पाकिस्तान को चेताया

और कहा, 'सुख चैन से जियो, रोटी खाओ, वरना मेरी गोली तो है ही।' इस बयान ने देश और दुनिया को स्पष्ट संकेत दे दिया कि भारत अब किसी भी आतंकी गतिविधि पर चुप नहीं बैठेगा। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि भारत की नीति आतंकवाद पर जीरो टोलरेंस की है और 'ऑपरेशन सिंदूर' इस नीति की सशक्त अभिव्यक्ति है। उन्होंने कहा कि जो मासूमों का खून बहाएगा, उसे हर हाल में उसकी सजा मिलेगी।

गुजरात दौरे के दौरान पीएम मोदी ने वडोदरा, दाहोद और इसके बाद भुज में रोड शो किया। वहीं, दाहोद और भुज में जनसभा की। प्रधान मंत्री ने अपने गुजरात दौरे के दौरान भुज और दाहोद में भारी निवेश की सौगातों के साथ कच्छ के विकास को नई दिशा देने का संदेश दिया। भुज में आयोजित एक भव्य जनसभा में उन्होंने 53,400 करोड़ रुपए की लागत से जुड़े 31 परियोजनाओं का शिलान्यास और ई-लोकार्पण किया। प्रधान मंत्री ने मोदी ने अपने सम्बोधन में विशेष रूप से कच्छ की प्रगति को रेखांकित करते हुए कहा कि भूकम्प की विनाशलीला से उभर कर आज कच्छ व्यापार, कारोबार और पर्यटन का एक बड़ा केंद्र बन चुका है। उन्होंने यह भी विश्वास जताया कि आने वाले वर्षों में कच्छ की यह भूमिका और अधिक व्यापक एवं निर्णायक होगी। रेगिस्तान से घिरे जिस क्षेत्र को कभी धूल और नमक का प्रतीक माना जाता था, आज वही कच्छ भारत को ऊर्जा प्रदान करने वाला प्रमुख क्षेत्र बन चुका है। इस दौरान उन्होंने दाहोद में भी लगभग 24,000 करोड़ रुपए की लागत वाली अनेक विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास कर क्षेत्रीय समावेशी विकास को प्राथमिकता देने का संदेश दिया।

पश्चिम बंगाल की सियासत एक बार फिर केंद्र और राज्य सरकार के आमने-सामने की स्थिति में दिखाई दी, जब प्रधान मंत्री मोदी ने अलीपुरद्वार में जनसभा को सम्बोधित करते हुए राज्य की सत्ताधारी पार्टी और उसकी नीतियों पर तीखा हमला बोला। अपने लगभग 32 मिनट के भाषण में न केवल केंद्र की जनकल्याणकारी योजनाओं की चर्चा कीं , बल्कि बंगाल में उनके प्रभावी क्रियान्वयन में आ रही बाधाओं को लेकर भी ममता सरकार को कठघरे में खड़ा किया। इस दौरान उन्होंने 'ऑपरेशन सिंदूर' का उल्लेख करते हुए इसे भारत की सामरिक शक्ति और संकल्प का प्रतीक बताया और कहा कि पाकिस्तान को अब स्पष्ट संदेश मिल चुका है, भारत अब घर में घुसकर वार करता है। उन्होंने बंगाल की भूमि को 'बंगाल टाइगर की धरती' बताते हुए यह ऐलान किया कि ऑपरेशन सिंदूर अभी समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि यह देश के 140 करोड़ नागरिकों की सामूहिक भावना का प्रतीक बन चुका है। साथ ही प्रधान मंत्री ने गरीबों के आवास, स्वास्थ्य और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर टीएमसी सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि आयुष्मान भारत योजना जैसे केंद्र की महत्वाकांक्षी योजनाएं यहां राजनीतिक कारणों से रोक दी गई हैं। मुर्शिदाबाद और मालदा की घटनाओं का हवाला देते हुए उन्होंने राज्य सरकार पर तुष्टिकरण की राजनीति और गुंडागर्दी को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। इसी मंच से उन्होंने 1010 करोड़ रुपए की लागत वाले सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन प्रोजेक्ट की आधारशिला भी रखी, जो क्षेत्र के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

बिहार विधानसभा चुनावों से पहले प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का राज्य का दौरा राजनीतिक और विकासात्मक दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। दो दिवसीय यात्रा पर बिहार पहुंचे प्रधान मंत्री ने बिक्रमगंज से प्रदेशवासियों को 48,500 करोड़ रूपये की विकास परियोजनाओं की सौगात दीं। उन्होंने भोजपुरी भाषा में अभिवादन कर जनमानस से सीधा जुड़ाव स्थापित किया। इसके साथ ही अपने सम्बोधन में कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) पर तीखा हमला किया। विकास के मोर्चे पर उन्होंने पटना-गया-डोभी फोरलेन सड़क, गोपालगंज में चार लेन एलिवेटेड रोड, सोननगर-मुहम्मदगंज तीसरी रेल लाइन, सासाराम से अनुग्रह नारायण रोड तक ऑटोमेटिक ब्लॉक सिग्नलिंग और जहानाबाद में छात्रावास व स्टाफ क्वार्टर जैसी परियोजनाओं का उद्घाटन कर राज्य को मूलभूत ढांचे की नई सौगातें दीं।

उत्तर प्रदेश के कानपुर के लिए भी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का आगमन विकास की नई सौगात लेकर आया। उन्होंने ने कुल 47,000 करोड़ रुपए की लागत वाली विभिन्न विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया, जिनमें कानपुर मेट्रो परियोजना, दो अत्याधुनिक पावर प्लांट और डिफेंस कॉरिडोर जैसी महत्त्वपूर्ण योजनाएं शामिल हैं। ये योजनाएं न केवल कानपुर बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश के औद्योगिक और आधारभूत ढांचे को मजबूती प्रदान करेंगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हालिया 6 राज्यों के दौरे का व्यापक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यह अभियान केवल एक औपचारिक राजनीतिक यात्रा नहीं, बल्कि बहुस्तरीय संदेशों से युक्त रणनीतिक दौरा था। इसका पहला और सबसे महत्वपूर्ण बिंदु था विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता।

***

जहां इस्लाम में शराब को हराम माना जाता है, वहीं सऊदी अरब के सरकार द्वारा एक ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है। जी हां! अब हलाल-हराम की अवहेलना कर सऊदी अरब में भी अब जाम छलकाने की तैयारी की जा रही है।

बदलाव की ओर सऊदी अरब

अल्केश चतुर्वेदी

दशकों से तेल आधारित अर्थव्यवस्था के लिए पहचाना जाने वाला सऊदी अरब अब एक ऐतिहासिक बदलाव की ओर अग्रसर है। देश की सत्ता के केंद्र में बैठे क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने 'विजन 2030' के जरिए सऊदी समाज, अर्थव्यवस्था और प्रशासनिक ढांचे में मूलभूत बदलाव की रूपरेखा प्रस्तुत की है। इस योजना का उद्देश्य है, तेल पर निर्भरता कम करना, निजी निवेश को बढ़ाना और सऊदी अरब को वैश्विक निवेश केंद्र में बदलना। हालांकि यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं है बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक धरातल पर भी गूंज रहा है।

तेल से आगे की दुनिया

'विजन 2030' के अंतर्गत सरकार चाहती है कि गैर-तेल क्षेत्र का योगदान 2030 तक कुल जीडीपी का 65% हो जाए। इसके लिए पर्यटन, मनोरंजन, तकनीक, वित्त और स्वास्थ्य क्षेत्र में भारी निवेश किया जा रहा है। सऊदी अरब में सरकारी कम्पनियों के शेयर बेचकर अरबों डॉलर जुटाए जा चुके हैं। इस्लाम में शराब हराम है, परंतु सऊदी अरब ने अब आधुनिक जीवनशैली अपना कर पर्यटन की दृष्टिकोण से जाम छलकाने की तैयारी भी कर ली है। देश के सॉवरेन वेल्थ फंड पब्लिक इंवेस्टमेंट फंड (पीआईएफ) को दुनिया के सबसे बड़े निवेश कोषों में से एक बनाने का लक्ष्य रखा गया है, जिससे वैश्विक स्तर पर सऊदी की आर्थिक पकड़ मजबूत हो सके।

सपनों का शहर: NEOM

इस विजन की सबसे चमकदार परियोजना है NEOM, एक भविष्यवादी शहर जिसकी लागत लगभग 500 अरब डॉलर आंकी गई है। इसी के भीतर प्रस्तावित 'The Line' नामक शहरी कॉरिडोर की परिकल्पना की गई है, जहां न सड़कें होंगी, न कारें, न ही प्रदूषण। इस स्मार्ट सिटी को AI, सस्टेनेबिलिटी और ग्रीन एनर्जी का प्रतीक बनाया जाएगा।

पर्यटन और संस्कृति में खुलापन

पहली बार सऊदी अरब ने अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए अपने दरवाजे खोले हैं। ई-वीजा प्रणाली, रेड सी प्रोजेक्ट, अल-उला जैसे ऐतिहासिक स्थलों का विकास और सिनेमा हॉल्स की वापसी जैसे निर्णय इस दिशा में बड़े कदम माने जा रहे हैं।

महिलाओं की नई भूमिका

देश में महिलाओं को गाड़ी चलाने, कार्यस्थलों पर समान अवसर, और पुरुष अभिभावक की अनुमति के बिना यात्रा जैसे अधिकार दिए गए हैं। महिला श्रमबल की भागीदारी 2016 में जहां मात्र 22% थी, वहीं अब यह आंकड़ा 35% के पार जा चुका है।

परम्परा से टकराता बदलाव

जहां एक ओर ये बदलाव सऊदी अरब को 21वीं सदी की अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में ले जा रहे हैं, वहीं देश के रूढ़िवादी वर्गों और धार्मिक संस्थाओं में असंतोष भी साफ देखा जा सकता है। मनोरंजन, फैशन शो के कार्यक्रम और महिलाओं की बढ़ती सार्वजनिक भागीदारी को लेकर कई धार्मिक विद्वान खुलकर आलोचना कर चुके हैं। कुछ लोग इन बदलावों को इस्लामी मूल्यों से विचलन की संज्ञा दे रहे हैं। 'विजन 2030' न केवल सऊदी अरब का भविष्य तय करेगा बल्कि यह भी दिखाएगा कि एक परम्परागत इस्लामी राष्ट्र, किस सीमा तक स्वयं को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए ढाल सकता है।

***

आपके हाथों में ही आपके आर्थिक प्रबंधन की कुंजी है। कमाने के साथ-साथ बचत व निवेश भी आवश्यक हैं, जिससे हमारी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहे।

आपके हाथों में आर्थिक प्रबंधन की चाबी

वित्तीय ज्ञान- चाहे हम नौकरीपेशा हों, व्यापार करते हों या घर सम्भालते हों, पैसे का सही प्रबंधन हर किसी के लिए आवश्यक है। अधिकतर लोगों को यह नहीं पता कि अपनी कमाई को कैसे बढ़ाया जाए, बचत की आदत कैसे डालें या निवेश के द्वारा अपने पैसे को सुरक्षित कैसे रखें।

पैसा हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने का साधन है, किंतु यदि हमें पैसे के प्रबंधन की समझ नहीं है, तो यह समस्याओं का कारण बन सकता है।

वित्तीय ज्ञान हमें सिखाता है:

✲ कमाई और खर्च का संतुलन बनाना।

✲ आपातकालीन स्थितियों के लिए तैयार रहना।

✲ निवेश के जरिए धन बढ़ाना।

✲ कर्ज के जाल से बचना।

एक सर्वे के अनुसार भारत में 76% लोगों के पास आपातकालीन फंड नहीं है और 90% से अधिक लोग निवेश के बारे में जागरूक नहीं हैं। यह आंकड़े बताते हैं कि वित्तीय साक्षरता की कमी हमें आर्थिक रूप से कमजोर बना रही है।

वित्तीय ज्ञान की शुरुआत योजना बनाने से होती है। अपने महीने की आय और खर्च को लिखें। इससे आपको पता चलेगा कहां अतिरिक्त खर्च हो रहा है (जैस- बार-बार ऑनलाइन शॉपिंग)।

✲ किन आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी है (जैसे- बच्चों की पढ़ाई, बीमा)। कितनी बचत करनी है।

✲ 50-30-20 का नियम अपनाएं।

✲ 50% आय आवश्यकताएं (खाना, किराया, बिल)।

✲ 30% आय पसंद (मनोरंजन, घूमना)।

20% आय बचत और निवेश।

बचत करना केवल पैसे जमा करना नहीं बल्कि अनुशासन सीखना है। छोटी-छोटी बचत भी लम्बे समय में बड़ा अंतर ला सकती है।

ऑटोमेटिक सेविंग: हर महीने की आय का एक हिस्सा सीधे बचत खाते में जमा करवाएं।

लक्ष्य तय करें: जैसे, 5 वर्ष में घर खरीदना या बच्चों की पढ़ाई के लिए फंड बनाना।

निवेश का अर्थ मात्र शेयर बाजार या सोना नहीं है। आपके दायित्व उठाने की क्षमता और लक्ष्य के हिसाब से निवेश के विकल्प चुनें-

सुरक्षित विकल्प: FD, PPF, सरकारी बॉन्ड।

मध्यम जोखिम: म्यूचुअल फंड, रियल एस्टेट।

उच्च जोखिम: शेयर मार्केट, क्रिप्टो करेंसी।

बीमा: हानि से सुरक्षा

जीवन अनिश्चितताओं से भरा है। स्वास्थ्य बीमा और टर्म इंश्योरेंस आपको और आपके परिवार को आपात स्थितियों में सुरक्षा देते हैं।

इन गलतियों से बचें

अनियंत्रित खर्च: मित्रों के दबाव में महंगा फोन खरीदना।

निवेश की जल्दबाजी: बिना रिसर्च के शेयर खरीदना।

बीमा न लेना: मुझे बीमा की क्या आवश्यकता?

वित्तीय योजना को टालना: कल से शुरू करूंगा।

इन आर्थिक प्रबंधन को ध्यान में रखकर आप बचत व निवेश आसानी से कर सकते हैं जिससे भविष्य में आपको आर्थिक परेशानी नहीं झेलनी पड़ेगी।

***

Finest Saffron In The World
5g
50mg
1g
Pack Size Available
0.25g
0.5g
Benefits Of Saffron
• Boosts Brain Health
• Improves Digestion
• Improves Vision
• Prevents Hair Loss
Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT
TM
#CelebrateSaffronEveryday
केसर
एक गैर-हस्तांतरणीय दिव्य उपहार पूजा और प्रसाद सम्पूर्ण
• शुद्धता, पवित्रता और समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है
• दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करता है, शांति और ज्ञान लाता है
• धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान भक्तों के माथे को सुशोभित करता है
• प्रसादम के संवेदी अनुभव को बढ़ाने का एक पवित्र घटक
• केसर उपहार अमूल्य और गौरव का प्रतीक है
शुद्ध केसर उपहार को लोग इसके शुभ मूल्य और आध्यात्मिक जुड़ाव के कारण रखना पसंद करते हैं
DIGITAL EYES
Groceries Impex: 99990 92561 | 96506 35204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address: R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi - 110092. | Managing Unit: D-94/A, Matiala Extenstion, Dwarka, New Delhi - 110059

वर्चुअल रियलिटी के साथ आगे बढ़ें

वर्चुअल रियलिटी का प्रयोग प्रत्येक क्षेत्र में किया जा रहा है, जो हमें अधिक स्मार्ट, प्रभावशाली और कुशल बना रहा है। इसके साथ आगे बढ़ना आज की मांग है।

यह कम्प्यूटर-जनित वह तकनीक है जो हमें एक नकली आभासी दुनिया का अनुभव असली की तरह कराती है। जो असल में उपस्थित नहीं होती, परंतु यह इतनी असली लगती है कि हमें लगता है कि हम सचमुच उसी स्थान पर हैं जो हमें दिखाया जा रहा है। इसे अनुभव करने के लिए हमें एक विशेष हेडसेट पहनना होता है, जो हमारी आंखों को पूरी तरह से ढक लेता है। कम्प्यूटर से बनाया गया वह दृश्य आभासी होते हुए भी हम असली समझने लगते हैं। कल्पना कीजिए कि हम कमरे में बैठे हैं। तब हेडसेट लगाते ही इस तकनीक से हम ऐसा अनुभव करने लगते हैं कि हम मंगल ग्रह पर घूम रहे हैं या एक विशाल व्हेल के साथ समुद्र की गहराई में तैर रहे हैं। कम्प्यूटर जनित इन अनुभवों के करण हम कमरे में बैठे-बैठे कभी डरते हैं, कभी हंसते हैं तो कभी आनंदित होते हैं। उस 3डी वातावरण में हम पूरी तरह डूबकर उसे सत्य समझने लगते हैं। आज की डिजिटल दुनिया में वर्चुअल रियलिटी (वीआर) एक अनोखी और एवं अत्यंत प्रभावशाली तकनीक के रूप में उभर रही है। जिसके साथ आगे बढ़ना आवश्यक हो गया है क्योंकि हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहां हर चीज तेजी से डिजिटल हो रही है जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, मनोरंजन आदि हैं। वीआर इन सभी क्षेत्रों को और ज्यादा संवादात्मक (इंटरएक्टिव), प्रभावी और आधुनिक बना रहा है। आजकल वर्चुअल रियलिटी का निम्नलिखित क्षेत्रों में क्रांतिकारी प्रभाव दिखाई दे रहा हैं -

✻ वीआर के माध्यम से बिना यात्रा किए, बिना रिस्क लिए, कोई भी व्यक्ति वास्तविक अनुभव प्राप्त कर सकता है, जैसे ऑपरेशन करना सीखना, अंतरिक्ष का दौरा करना या विदेश की सैर करना आदि।

✻ वर्चुअल रियलिटी ने शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में अद्वितीय प्रभाव डाला है। विद्यार्थी अब केवल पुस्तकों से नहीं बल्कि 3डी वर्चुअल क्लासरूम में इंटरएक्टिव ढंग से सीख सकते हैं। पायलट्स, डॉक्टर्स, सर्जन्स जैसे प्रोफेशनल्स को रियल-टाइम सिमुलेशन में प्रशिक्षित किया जा सकता है।

✻ वर्क फ्रॉम होम और दूरस्थ सहयोग (रिमोट कोलैबरेशन) आज प्रचलित है। वर्चुअल ऑफिस, मीटिंग रूम और कॉन्फ्रेंस हॉल की सहायता से दुनिया के किसी भी कोने से यह सहयोग सम्भव है। वीआर के माध्यम से वर्चुअल मीटिंग्स में प्रोडक्ट का डेमो बड़े प्रभावशाली ढंग से देना सम्भव है।

✻ वीडियो गेम और मनोरंजन की दुनिया में वीआर ने क्रांतिकारी बदलाव किया है। उपयोगकर्ता स्वयं को खेल के अंदर अनुभव कर सकते हैं, जिससे उनके अनुभव और भी रोमांचक हो जाते हैं।

✻ व्यावसायिक क्षेत्र और रियल एस्टेट के क्षेत्र में ग्राहक बिना किसी साइट पर जाए वर्चुअल टूर कर सकते हैं। आज कम्पनियां अपने उत्पादों को नए तरीके से प्रस्तुत कर रही हैं, जिससे ग्राहक का अनुभव बेहतर हो रहा है।

✻ आर्किटेक्ट्स और डिजाइनर्स अपने 3डी मॉडल को वर्चुअल रूप में दिखा सकते हैं और उसमें संशोधन कर सकते हैं, जिससे समय और संसाधनों की बचत होती है।✻ सेना और पुलिस में तथा युद्ध या आपातकालीन परिस्थितियों की ट्रेनिंग बिना संकट के वर्चुअल रियलिटी से प्रभावकारी होती है।

सुनीता माहेश्वरी

वर्चुअल रियलिटी का प्रयोग हर क्षेत्र में आवश्यक हो गया है चाहें हम व्यवसाय कर रहे हों या डॉक्टर हों, शिक्षक हों या आर्किटेक्ट्स या डिजाइनर्स या फिर किसी अन्य क्षेत्र में। आभासी दुनिया को भी 3डी वीडियो बहुत आकर्षक बना देते हैं।

✻✻✻

पति-पत्नी जब एक दूसरे से भावानात्मक रूप से नहीं जुड़ते हैं और रिश्तों में उदासीनता रहती है तो यह सम्बंध आगे चलकर मूक तलाक का रूप ले लेते हैं।

विवाह-विच्छेद

मूक तलाक चुनौती एवं समाधान

जिस प्रकार लिव-इन रिलेशनशिप और विवाह एक साथ रहने के दो अलग-अलग रूप हैं, उसी प्रकार तलाक और मौन तलाक किसी युगल के एक साथ न रहने के अलग-अलग रूप में दिखाई पड़ते हैं। जहां विवाह एवं तलाक एक दीर्घकालिक सांस्कृतिक/संवैधानिक व्यवस्था है, वहीं लिव-इन रिलेशनशिप और मौन तलाक (भावनात्मक) व्यक्तिगत स्तर पर अनुभव की जाने वाली गम्भीर परिस्थिति है, जिसका प्रतिकूल प्रभाव धीर-धीरे व्यक्ति के साथ साथ परिवार और समाज पर पड़ना अवश्यम्भावी है।

तलाक को अभी भी भारतीय परिवेश में अधिकांशतः यथासम्भव टालने का प्रयास किया जाता है तथा बढ़ते मनमुटाव का कोई अन्य उपयुक्त समाधान न मिल पाने के कारण भावनात्मक अलगाव कब भावनात्मक अथवा मौन तलाक का रूप ले लेता है, पता ही नहीं चलता है। इसका सबसे अधिक दुष्परिणाम भावी पीढ़ी अर्थात बच्चों पर पड़ता है। विवाह के बारे में उनके अंदर एक भ्रम, भय और अनिश्चितता घर कर जाती है, जिससे कुछ युवा लिव इन जैसे रिश्तों की ओर आकर्षित होने लगते हैं तथा एक अलग प्रकार की अस्पष्ट जिम्मेदारियों वाली आधारहीन रिश्ते में भी फंस जाते हैं।

भावनात्मक रिश्तों का संघर्ष अनेक मानसिक बीमारियों और अवसाद का कारण भी बनता है जो कि अनेक सामाजिक बुराइयों जैसे नशे, विवाहेतर सम्बंधों और अन्य अपराधों को भी जन्म देती हैं। तलाक जहां एक गम्भीर पारिवारिक समस्या है, वहीं भावनात्मक तलाक व्यक्तिगत रूप से परिवार के हर व्यक्ति को दीमक की तरह अंदर से खोखला कर अंततः हर रिश्ते को समाप्त कर देता है। यदि भावनात्मक रिश्ता समाप्त हो जाता है तो प्रभावित व्यक्तियों अधिकतर महिलाओं और बच्चों को न तो न्याय मिलता है, न ही सम्पत्ति या रख-रखाव का कोई औपचारिक विभाजन होता है जिससे कानूनी सुरक्षा, सम्पत्ति, विरासत, गुजारा भत्ता, बीमा आदि से सम्बंधित अधिकार भी नहीं मिलते हैं तथा यह तलाक से भी बदतर स्थिति होती है। व्यक्ति एकांतिक तथा भावनात्मक रूप से जटिल होने लगता है।

प्रो. (डॉ.) शीला मिश्रा

तलाक और मौन तलाक रिश्ते टूटने के दो अलग-अलग तरीके हैं, परंतु दोनों ही विघटनकारी और गम्भीर सामाजिक समस्या हैं। तुलनात्मक रूप से तलाक (कानूनी तलाक) न्यायालयीन कार्यवाही के माध्यम से विवाह की औपचारिक, कानूनी समाप्ति है जिसमें कानूनी स्पष्टता: सम्पत्ति, हिरासत, गुजारा भत्ता आदि पर स्पष्ट नियमों के साथ विवाह का आधिकारिक अंत होता है जिसमें पुनर्विवाह करने की स्वतंत्रता तथा एक स्पष्ट अंत उपचार और नए सिरे से शुरुआत की जा सकती है। भावनात्मक संघर्ष, आघात और सामाजिक/पारिवारिक निर्णय, बच्चों पर प्रभाव, तनाव आदि के कारण युगल मौन तलाक (भावनात्मक तलाक) की ओर बढ़ जाते हैं जिसमें विवाहित जोड़ा साथ रहना जारी रखता है, परंतु भावनात्मक और शारीरिक रूप से अलग हो जाता है, यहां कोई कानूनी अलगाव नहीं होता है, पर रिश्ता अनिवार्य रूप से समाप्त ही हो चुका होता है। कहने को तो रूढ़िवादी संस्कृतियों में यह तथाकथित सामाजिक कलंक से बचाता है और बच्चों के लिए स्थिरता और हितकारी प्रतीत होती है। परंतु भावनात्मक अकेलेपन के कारण घर में एक विषाक्त वातावरण,

निष्क्रिय आक्रामकता या भावनात्मक उपेक्षा युगल एवं परिवार सभी के मानसिक स्वास्थ्य को अनुमान से अधिक हानि पहुंचा सकती है। बच्चों के लिए यह सबसे खराब मॉडल है जहां बच्चे अस्वस्थ सम्बंध पैटर्न सीखते हैं। दोनों ही युगल अलग-अलग समानांतर जीवन जीते हैं तथा केवल रूममेट की तरह अनुभव करते हैं। वह पारिवारिक एजेंडे की बजाए अपने व्यक्तिगत एजेंडे पर ध्यान, ऊर्जा और समय अधिक केंद्रित करते हैं। संघर्ष की जगह उदासीनता ले लेती है और अंत में लड़ना भी बंद कर देते हैं। इसलिए नहीं कि सब ठीक है, बल्कि इसलिए कि अब आशा समाप्त हो गई है और परवाह भी नहीं है।

वैसे यदि मूक तलाक की पहचान शुरूआती दौर में ही हो जाए तो बदलाव करना आसान हो जाता है, पर कई जोड़ों को तब तक इसका अनुभव भी नहीं होता जब तक कि यह अलगाव इतना व्यापक न हो जाए कि उसे ठीक न किया जा सके। इसके प्रारम्भिक लक्षण भावनाओं, आशाएं या आशंकाओं को साझा न करना (भावनात्मक जुड़ाव की कमी), न्यूनतम संचार, सतही बातचीत अथवा बात करने से बचना, शारीरिक अंतरंगता फीकी पड़ना इत्यादि हो सकते हैं। जिसे अनदेखा बिलकुल नहीं किया जाना चाहिए। यदि दोनों पक्षों को लगता है कि कुछ आशा बची है तो इस पर काम किया जा सकता है। भावनात्मक दूरी को स्वीकार करें और पूर्णनिष्ठा से बात करें, संचार को फिर से बनाएं, प्रतिदिन छोटी-छोटी सकारात्मक शुरुआत करें, पूरी बात बिना टोके बिना बचाव करते हुए सुनें, स्वीकृति सहित भावनात्मक/शारीरिक निकटता को फिर से जगाएं। कोई फिल्म देखें, साथ में घरेलू कार्य करें, खाना बनाएं आदि। विश्वसनीय श्रेष्ठजनों से परामर्श लें, तटस्थ पक्ष (काउंसलर/मनोवैज्ञानिक) फिर से जुड़ने में सहायता कर सकता है।

मौन तलाक अनसुलझे घावों या अधूरी भावनात्मक आवश्यकताओं से उत्पन्न होते हैं, उनका समाधान करने का प्रयत्न करें। निष्ठा, विश्वास और पारदर्शिता से यह रास्ता तय किया जा सकता है, पर यदि दोनों साथी फिर से जुड़ना चाहते हैं तो। तलाक अथवा मूक तलाक एक ओर कुआं तो दूसरी ओर खाई है। कानूनी तलाक दर्दनाक होता है, पर यह आपको फिर से सेट करने और पुनर्निर्माण करने का अवसर देता है। मौन तलाक शांत होता है, परंतु यह बिना किसी समाधान के वर्षों तक भावनात्मक रूप से थका सकता है। कुछ भी हो हमारी अनमोल पारिवारिक संस्था हमारा दायित्व है, जिसे बचाने का हर सम्भव प्रयास हर व्यक्ति, समाज और अन्य संगठनों तथा व्यवस्थाओं के माध्यम से होना ही चाहिए। एक स्वस्थ परिवार ही एक स्वस्थ समाज कि नींव रखा सकता है जिसकी शुरुआत कुटुंब प्रबोधन, जागरूकता और संवेदनशीलता से की जानी चाहिए।

***

अजीनोमोटो
स्वास्थ्य के लिए घातक

क्या आप भी चायनीज व फास्ट फूड खाने के शौकिन हैं तो जरा रुकिए! यह आपके शरीर के लिए घातक हो सकता है, यहां तक कि आप कई बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं। आखिर इन भोज्य पदार्थों में क्या मिला होता है, चलिए हम आपको बताते हैं।

अजीनोमोटो को हम इसके रासायनिक नाम मोनो सोडियम ग्लूटामेट के नाम से भी जानते हैं। इसका प्रयोग ज्यादातर चीन के खाद्य पदार्थों में खाने के स्वाद को बढ़ाने के लिए किया जाता है। पहले हम अधिकांशतः घर पर बने खाने को खाते थे, परंतु अब लोग चिप्स, पिज्ज़ा, मोमोज, अंडा रोल, मैगी और भी अनेक फास्ट फूड खाना ज्यादा पसंद करने लगे हैं, जिनमें अजीनोमोटो का प्रयोग किया जाता है। कई डिब्बाबंद फास्ट फूड, सोया सॉस, टोमेटो सॉस, संरक्षित मछली जैसे सभी संरक्षित खाद्य उत्पादों में इसका उपयोग किया जाता है। इसका स्वाद थोड़ा नमक के जैसा होता है। देखने में यह चमकीले छोटे क्रिस्टल के जैसा होता है। इसमें प्राकृतिक रूप से एमिनो एसिड पाया जाता है, किंतु आज दुनिया के हर कुक खाने में स्वाद को बढ़ाने के लिए इसका प्रयोग करते हैं।

पहले इसका प्रयोग चीन की रसोई में होता था, पर अब ये धीरे-धीरे हमारे भी घरों की रसोई में अपना पैठ बना चुका है। अपने समय को बचाने के लिए जो हम 2 मिनट में नूडल्स को तैयार करते हैं, इस तरह के अधिकांशतः खाद्य पदार्थों में यह पाया जाता है, जो धीरे-धीरे हमारे शरीर को हानि पहुंचाते हैं।

यह एक प्रकार से नशे की लत जैसा होता है, यदि आप एक बार अजीनोमोटो युक्त भोजन का स्वाद अच्छा लग गया तो आप उस भोजन को नियमित खाने की इच्छा रखने लगेंगे, जिससे कई भयावह परिणाम सामने आते हैं। इसके सेवन से शरीर में इंसुलिन की मात्रा बढ़ जाती है। रक्त में ग्लूटामेट का स्तर बढ़ जाता है, आंखों की रेटिना को हानि पहुंचता है, साथ ही यह थायराईड और कैंसर जैसे रोगों के लक्षण पैदा कर सकता है।

अजीनोमोटो से युक्त खाद्य पदार्थों का यदि नियमित सेवन किया जाए तो यह माइग्रेन पैदा कर सकता है, मोटापे के बढ़ने का संकट हमेशा बना रहता है। शरीर को रोगमुक्त बनाना हो तो आवश्यकता इस बात की है यदि आपको फास्ट फूड खाना अच्छा लगता है तो आप बाजार से तैयार नहीं खाएं बल्कि अपने घर पर देसी तरीके से बनाकर खाएं। ***

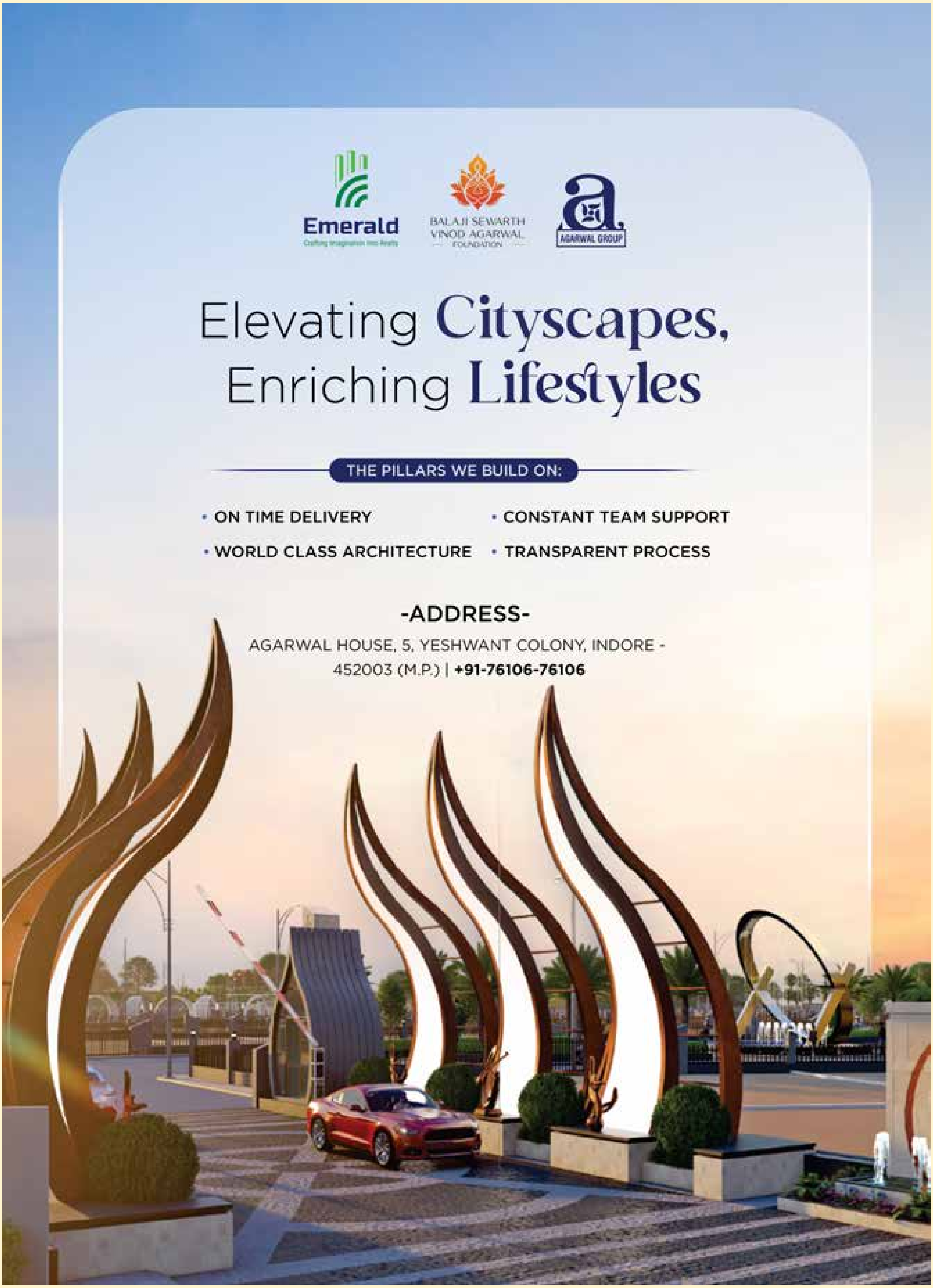
Emerald
BALAJI SEWARTH
VINOD AGARWAL
FOUNDATION
AGARWAL GROUP
Elevating Cityscapes,
Enriching Lifestyles
THE PILLARS WE BUILD ON:
• ON TIME DELIVERY
• CONSTANT TEAM SUPPORT
• WORLD CLASS ARCHITECTURE
• TRANSPARENT PROCESS
-ADDRESS-
AGARWAL HOUSE, 5, YESHWANT COLONY, INDORE - 452003 (M.P.) | +91-76106-76106

डॉ. आशालता नायडू

आप शारीरिक व मानसिक परेशानियों से ग्रसित हैं तो तलवे की मालिश से आपको तुरंत आराम मिल सकता है। इस आलेख में हम विस्तार से चर्चा करते हैं कि तलवे पर तेल की मालिश से क्या-क्या लाभ मिलते हैं।

समस्याओं से मुक्ति दिलाए तलवे की मालिश

हमारे पूरे शरीर का भार हमारे पैरों पर होता है। हमारे पैर हमारे शरीर के लिए स्तम्भ का कार्य करते हैं अर्थात हमारे शरीर का आधार हमारे पैर ही हैं। जिस तरह एक वृक्ष का आधार उसकी जड़ें होती हैं। जड़ जितनी अधिक मजबूत होगी, पेड़ उतना ही अधिक हरा-भरा मजबूत होगा। उसे कोई आंधी या तूफान डिगा नहीं सकता। उसी प्रकार हमारे अपने पैर हैं। हमारे पैरों की मजबूती ही हमारे जीवन का आधार हैं।

हमारे दोनों पैरों को मिलाकर हमारे शरीर का 50% नस, 50% रक्त वाहिनी और 50% रक्त बहता है। यह हमारे शरीर का सबसे बड़ा संचार नेटवर्क है। इसीलिए तो कुछ लोग पिंडली को नर्वस और वेंस के कारण उसे छोटा दिल कहते हैं, जो पूरे शरीर को जोड़ता है। हमारे पैर का नीचला हिस्सा जो तलवा कहलाता है, उसका सम्बंध सम्पूर्ण शरीर से होता है। यहां तक कि पैर के तलवे में एक्यूप्रेशर के सारे पॉइंट्स होते हैं।

यदि हम अपने तलवों पर पूरा ध्यान केंद्रित करेंगे, तो शरीर के किसी भी हिस्से की कोई भी समस्या का समाधान एक्यूप्रेशर से तुरंत प्राप्त कर सकते हैं। तलवे की देखभाल उचित रूप से करनी चाहिए। छोटे से तलवे में सरसों के तेल की मालिश अत्यधिक लाभदायक होती है। इससे हमें अनेक शारीरिक व मानसिक लाभ प्राप्त होते हैं। तलवों के नियमित मालिश से रक्त प्रवाह बेहतर होता है। ठंड से होने वाली अकड़न से राहत मिलती है, एंडोर्फिन हार्मोन एक्टिव होते हैं, जिससे तनाव दूर होता है और मानसिक शांति मिलती है। लम्बे समय तक खड़े रहने से पैरों के दर्द और परेशानी से मालिश से आराम मिलता है, नर्वस सिस्टम को आराम मिलता है जिससे नींद अच्छी आती है और अनिंद्रा की समस्या भी दूर होती है। तलवे में स्थित प्रेशर पॉइंट पाचन तंत्र पर प्रभाव डालते हैं जिससे पाचन क्रिया में सहायता मिलती है। इसकी नियमित मालिश से पैरों की एडियां फटती नहीं हैं और हमारी त्वचा कोमल रहती है। हमारा ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है।

तलवे पर मालिश के साथ यदि एक्यूप्रेशर के पॉइंट दिए जाएं तो सोने में सुहागा हो जाता है। कई परेशानियों से आराम मिलता है। तलवे में हमारे पूरे शरीर के प्रत्येक अंग व अवयव के प्रेशर पॉइंट्स हैं। उन प्रेशर पॉइंट्स पर उचित दबाव डालने से जल्द आराम मिलता है। जैसे कंधे में दर्द हो तो तलवे की छोटी उंगली के नीचे कोने में कंधे का प्रेशर पॉइंट है। इसे दबाने से कंधे के दर्द से मुक्ति मिलती है।

एक बार जब आप प्रेशर पॉइंट्स का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर, इसका उपयोग करेंगे तो अपने आप लाभ का अनुभव करेंगे और इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लेंगे। वैसे मालिश के लिए सरसों का तेल सबसे अच्छा है, पर आप नारियल का तेल, तिल का तेल या जैतून का तेल भी उपयोग में ला सकते हैं। इस तरह यदि हम केवल 10 मिनट ही प्रतिदिन नियमित रूप से तलवों की मालिश करेंगे तो निश्चित ही अनेक शारीरिक व मानसिक समस्याओं से मुक्त मिलेगी। ***

मानसिक शांति की मुद्रा हाकिनी

आप स्वस्थ रहने के लिए नियमित योगाभ्यास करते हैं, लेकिन क्या आप तनावमुक्त व मानसिक रूप से शांत भी रहना चाहते हैं तो आप प्रतिदिन हाकिनी मुद्रा कर सकते हैं। इस के करने से आप तनाव मुक्त तो रह ही सकते हैं साथ ही आप कई बीमारियों से भी दूर रह सकते हैं।

योग

मुद्रा स्थिति

- किसी शांत स्थान पर पद्मासन, सुखासन या वज्रासन में बैठ जाएं।
- दोनों हाथों की अंगुलियों के अग्रभाग (फिंगर टिप्स) एक-दूसरे से मिला लें।
- हाथों को इस प्रकार मिलाएं कि उनकी स्थिति एक कलश या त्रिकोण की आकृति जैसी हो जाए।
- हाथों को शरीर के सामने, छाती के समीप रखें।
- जिव्हा (जीभ) को तालु (मुंह के ऊपरी भाग) से लगाएं।

भारतीय योगशास्त्र में मुद्रा का विशेष स्थान है। यह केवल हाथों की एक प्रतीकात्मक स्थिति नहीं है, बल्कि प्राचीन भारतीय साधना पद्धति का एक गूढ़ आयाम है। जो शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक ऊर्जा के संतुलन को साधता है। इसी श्रृंखला में हाकिनी मुद्रा एक विशिष्ट और प्रभावशाली हस्तमुद्रा है, जो ध्यान और एकाग्रता को सशक्त करती है।

हाकिनी शब्द का अर्थ

हाकिनी संस्कृत का शब्द है, जिसका तात्पर्य शक्ति या शासन करने वाली देवी से है।

योगशास्त्र में हाकिनी मुद्रा

हाकिनी मुद्रा एक विशेष हस्तमुद्रा है, जिसका अभ्यास ध्यानावस्था में किया जाता है। यह मुद्रा आज्ञा चक्र को सक्रिय करने के साथ-साथ प्राण ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित करती है। हठयोग प्रदीपिका और घेरण्ड संहिता जैसे ग्रंथों में विभिन्न मुद्राओं का वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया है। हाकिनी मुद्रा उन्हीं में से एक है, जिसे ध्यान साधना के लिए अत्यंत उपयोगी माना गया है।

अपनी दृष्टि को आज्ञा चक्र (भ्रूमध्य के मध्य) पर केंद्रित करें।

श्वास-प्रश्वास को सहज बनाए रखें और ध्यानपूर्वक कुछ समय तक इस स्थिति में रहें।

डॉ. अनुराधा नरवणे

हाकिनी मुद्रा के लाभ

प्राण ऊर्जा का संतुलन: यह मुद्रा प्राणवायु के प्रवाह को नियंत्रित करती है, जिससे शरीर में ऊर्जा का उचित संचार होता है।

मानसिक स्पष्टता व स्मरणशक्ति में वृद्धि: आज्ञा चक्र पर ध्यान केंद्रित करने से एकाग्रता, बुद्धि और स्मरणशक्ति तीव्र होती है।

तनाव एवं मानसिक अशांति में लाभदायक: नियमित अभ्यास से मन शांत होता है और तनावमुक्ति मिलती है।

तंत्रिका तंत्र को सुदृढ़ बनाना: यह मुद्रा मस्तिष्क को सक्रिय करती है, जिससे तंत्रिका तंत्र मजबूत होते हैं।

चक्रों का संतुलन: इससे शरीर के ऊर्जाकेंद्र (चक्र) सक्रिय होते हैं, जो सम्पूर्ण स्वास्थ्य में सहायक होते हैं।

चिकित्सकीय लाभ: यह मुद्रा ध्यान, उपचार (हीलिंग) और आंतरिक संतुलन के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

हाकिनी मुद्रा योग की वह रहस्यमयी कुंजी है, जो साधक को आत्म-चेतना की उच्चावस्था तक ले जाती है। यह मात्र हाथों की स्थिति नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जीवन ऊर्जा को दिशा देने का माध्यम है। नियमित अभ्यास से व्यक्ति न केवल मानसिक स्पष्टता और स्मरणशक्ति प्राप्त करता है, बल्कि आंतरिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति की ओर भी अग्रसर होता है।

***

जन्मदिवस विशेष

छत्रसाल एक ऐसे योद्धा थे जिन्होंने मुगल शासक औरंगजेब को युद्ध में पराजित करके बुंदेलखंड में अपना स्वतंत्र हिंदू राज्य स्थापित किया। इसलिए बुंदेलखंड में देवी-देवताओं के साथ-साथ छत्रसाल को भी याद किया जाता है।

मुगलों पर भारी बुंदेलखंड का शेर छत्रसाल

बुंदेलखंड की वीर भूमि में 3 जून, 1649 (ज्येष्ठ शुक्ल 3,विक्रम संवत 1706) को चम्पतराय और लालकुंवर के घर में छत्रसाल का जन्म हुआ था। चम्पतराय सदा अपने क्षेत्र से मुगलों को खदेड़ने के प्रयास में लगे रहते थे। अतः छत्रसाल पर भी बचपन से इसी प्रकार के संस्कार पड़ गए। जब छत्रसाल केवल 12 वर्ष के थे, तो वह अपने मित्रों के साथ विंध्यवासिनी देवी की पूजा के लिए जा रहे थे। रास्ते में कुछ मुस्लिम सैनिकों ने उनसे मंदिर का रास्ता जानना चाहा। छत्रसाल ने पूछा कि क्या आप लोग भी देवी मां की पूजा करने जा रहे हैं? उनमें से एक क्रूरता से हंसते हुए बोला, नहीं, हम तो मंदिर तोड़ने जा रहे हैं। यह सुनते ही छत्रसाल ने अपनी तलवार उसके पेट में घोंप दी। उनके साथियों ने भी सभी को यमलोक पहुंचा दिया। बुंदेलखंड के अधिकांश राजा और जागीरदार मुगलों के दरबार में हाजिरी लगाते थे। वे अपनी कन्याएं उनके हरम में देकर स्वयं को धन्य समझते थे। उनसे किसी प्रकार की आशा करना व्यर्थ था। एकमात्र छ. शिवाजी महाराज ही मुगलों से टक्कर ले रहे थे। छत्रसाल को पता लगा कि औरंगजेब के आदेश पर मिर्जा राजा जयसिंह शिवाजी महाराज को पकड़ने जा रहे हैं, तो वे जयसिंह की सेना में भर्ती हो गए और मुगलसेना की कार्यशैली का अच्छा अध्ययन किया।

जब वीर शिवाजी आगरा जेल से निकलकर वापस रायगढ़ पहुंचे, तो छत्रसाल ने उनसे भेंट की। छ. शिवाजी महाराज के आदेश पर फिर से बुंदेलखंड आकर उन्होंने अनेक जागीरदारों और जनजातियों के प्रमुखों से सम्पर्क बढ़ाया और अपनी सेना में वृद्धि की। अब उन्होंने मुगलों से अनेक किले और शस्त्रास्त्र छीन लिए। यह सुनकर बड़ी संख्या में नवयुवक उनके साथ आ गए। उधर औरंगजेब को जब यह पता लगा, तो उसने रोहिल्ला खां और फिर तहव्वर खां को भेजा, पर हर बार उन्हें पराजय ही हाथ लगी। छत्रसाल के दो भाई रतनशाह और अंगद भी वापस अपने भाई के साथ आ गए। अब छत्रसाल ने दक्षिण की ओर से जाने वाले मुगलों के खजाने को लूटना शुरू किया। इस धन से उन्होंने अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि की। एक बार छत्रसाल शिकार के लिए जंगल में घूम रहे थे, तो उनकी स्वामी प्राणनाथ से भेंट हुई। स्वामी जी के मार्गदर्शन में छत्रसाल की गतिविधियां और बढ़ गईं। विजयादशमी पर स्वामी जी ने छत्रसाल का राजतिलक कर उन्हें 'राजाधिराज' की उपाधि दी। एक बार मुगलों की शह पर हिरदेशाह, जगतपाल और मोहम्मद खां बंगश ने बुंदेलखंड पर तीनों ओर से आक्रमण कर दिया। वीर छत्रसाल की आयु उस समय 80 वर्ष की थी। उन्हें छ. शिवाजी महाराज का वचन याद आया कि संकट के समय में हम तुम्हारी सहायता अवश्य करेंगे। इसे याद कर छत्रसाल ने मराठा सरदार बाजीराव पेशवा को संदेश भेजा। संदेश मिलते ही बाजीराव ने तुरंत ही वहां पहुंचकर मुगल सेना को खदेड़ दिया। इस प्रकार छत्रसाल ने जीवन भर मुगलों को चैन नहीं लेने दिया।

विजय कुमार

महाकवि भूषण ने छत्रपति शिवाजी महाराज की स्तुति में 'शिवा बावनी' लिखी, उन्होंने ही 'छत्रसाल दशक' में आठ छंदों में छत्रसाल की वीरता और शौर्य का वर्णन किया है। आज भी बुंदेलखंड के घर-घर में लोग अन्य देवी-देवताओं के साथ छत्रसाल को भी याद करते हैं।

***

लघु कथा

आत्मविश्वास आवश्यक

किसी भी कार्य को करते समय यदि मन में प्रबल इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास हुआ, तो कठिन से कठिन कार्य भी सरल हो जाता है। जीवन में सदा काम आने वाले इस सूत्र को समझाने के लिए श्री गुरुजी जैन साहित्य में उल्लिखित एक कथा सुनाते थे। एक बार श्रीकृष्ण, बलराम और सात्यकि जंगल में घूमते-घूमते भटक गए। रात हो गई, पर घर वापस जाने का रास्ता नहीं मिला। हारकर उन्होंने वन में ही एक बड़े पेड़ के नीचे रात बिताने का निर्णय किया। जंगल काफी भयावह था, अत: यह भी निर्णय हुआ कि तीनों में प्रत्येक क्रमश: दो घंटे जागकर पहरा देगा। सबसे पहले सात्यकि की बारी थी। वह जागकर पहरा देने लगा, जबकि श्रीकृष्ण और बलराम सो गए। कुछ समय बीतने पर पेड़ से एक ब्रह्मराक्षस कूद कर सामने आ गया। उसने सात्यकि को डराकर कहा कि वह कई दिन से भूखा है। आज सौभाग्य से तुम तीन हट्टे-कट्टे लोग यहां आ गए हो, अब वह तीनों को खाएगा। सात्यकि को क्रोध आ गया। उसने कहा कि हमें खाने से पहले तुम्हें मुझसे युद्ध करना होगा। राक्षस तैयार हो गया। दोनों में युद्ध होने लगा। सात्यकि ने देखा कि जैसे-जैसे समय बीत रहा है, उसकी शक्ति कम हो रही है। दूसरी ओर वह राक्षस शक्ति और आकार में बड़ा होता जा रहा है। लड़ते-लड़ते दो घंटे बीत गए। अब जागने की बारी बलराम की थी। सात्यकि ने बलराम को जगाया और स्वयं सो गया। थोड़ी देर ही बीती थी कि वह राक्षस बलराम के सामने भी आ गया और फिर तीनों को खाने की बात कहने लगा। बलराम भला कहां कमजोर पड़ने वाले थे, उन्होंने भी राक्षस से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। बलराम को लड़ते-लड़ते दो घंटे बीतने लगे। वे थक गए, पर राक्षस की शक्ति कम होने के स्थान पर बढ़ती ही जा रही थी। हारकर उन्होंने श्रीकृष्ण को जगाया और स्वयं सो गए। अब राक्षस श्रीकृष्ण के सामने आकर भूख मिटाने की बात करने लगा। परिणामस्वरूप श्रीकृष्ण से उसकी कुश्ती चालू हो गई। पर श्रीकृष्ण ने लड़ने की एक नई विधि निकाली। उन्होंने इस युद्ध को एक खेल बना लिया। वे लड़ते जाते, राक्षस को मारते जाते और स्वयं हंसते भी जाते। राक्षस इस हंसी से परेशान हो गया। वह श्रीकृष्ण पर आघात करता, पर वे वार बचाकर जोर से हंस पड़ते। मौका देखकर श्रीकृष्ण उसे घूंसा मारते और फिर हंसते। राक्षस इस प्रकार के युद्ध का अभ्यस्त नहीं था। अब वह थकने लगा। इतना ही नहीं, तो उसका आकार भी कम होने लगा। एक समय तो वह मच्छर जितना छोटा हो गया। यह देखकर श्रीकृष्ण ने उसे अपने अंगोछे में बांध लिया। तब तक सुबह हो गई। सात्यकि और बलराम उठ गए। दोनों ने रात में राक्षस से जो मार खाई थी, उसके कारण वे दर्द से कराह रहे थे। श्रीकृष्ण को हंसते देख उन्होंने राक्षस की चर्चा की। श्रीकृष्ण ने अपने अंगोछे में बंधे राक्षस को सामने कर दिया।

यह कथा सुनाकर श्री गुरुजी कहते थे कि किसी भी काम को करते समय संकट तो आते ही हैं। यदि बलराम और सात्यकि की तरह आत्मविश्वास न रहे, तो वे संकट हम पर हावी हो जाते हैं, पर यदि श्रीकृष्ण की तरह हम हंसते हुए उनका सामना करें, तो संकट मच्छर की तरह छोटे होकर हमारे काबू में हो जाते हैं।

***

ये हैं भारत के रहस्यमयी स्थान

क्या आप रहस्यमयी जगहों को जानने की इच्छा रखते हैं तो आपको यह बहुत ही रोचक लगेगा। कुछ रहस्यमयी जगहें जो भारत में हैं, उनके बारे में विस्तार से बता रहे हैं, जिसे पढ़कर आप दांतों तले उंगली दबा लेंगे।

तलकाड, कर्नाटक में लघु रेगिस्तान

कर्नाटक के चामराजनगर जिले में कावेरी नदी के तट पर रेत में दबा एक गांव बसा है। माना जाता है कि तलकाड़ में कभी 30 मंदिर हुआ करते थे, जिनमें से 5 लिंगम हैं, जो भगवान शिव के 5 मुखों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव की एक विधवा भक्त ने एक बार इस भूमि को श्राप दिया था, जिसके बाद यह गांव इस अजीब रेगिस्तान में बदल गया। जहां कावेरी नदी रहस्यमय तरीके से एक भंवर में बदल जाती है।

कोडिंही

इस गांव में वर्तमान में 200 से अधिक जुड़वां बच्चे और तीन बच्चे हैं। इतना ही नहीं, कोडिंही की जो महिलाएं गांव से बाहर विवाह करती हैं, उन्हें भी जुड़वां या तीन बच्चे होते हैं। चिकित्सकों का मानना है कि इस अजीबोगरीब घटना का कारण क्षेत्र के पानी में उपस्थित रसायन है।

उत्तराखंड के चमोली में कंकालों की झील

भारत के इस रहस्यमयी स्थान पर हर वर्ष बर्फ पिघलने पर जमी हुई रूपकुंड झील की सतह के नीचे लगभग 300-600 कंकाल देखे जा सकते हैं। रेडियोकार्बन परीक्षण और फोरेंसिक जांच से पता चलता है कि ये लाशें 15वीं शताब्दी ई. की हैं।

स्थानीय लोगों का मानना है कि ये लाशें कन्नौज के तत्कालीन राजा-रानी और उनके सुरक्षा रक्षकों की हैं, जो तीर्थ यात्रा पर जा रहे थे, किंतु भयंकर ओलावृष्टि के कारण झील में गिर गए और उनकी मृत्यु हो गई।

***

तीन विशिष्ट शोध छात्रवृत्ति की घोषणा

स्वातंत्र्यवीर सावरकर राष्ट्रीय स्मारक (मुम्बई) द्वारा तीन विशिष्ट शोध छात्रवृत्ति की घोषणा की गई। जिनमें पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा शोध छात्रवृत्ति, बाबाराव सावरकर शोध छात्रवृत्ति, तथा नारायणराव सावरकर शोध छात्रवृत्ति शामिल है। उक्त सभी छात्रवृत्ति का उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता संग्राम, विशेष रूप से क्रांतिकारी आंदोलन और स्वातंत्र्यवीर सावरकर के जीवन, विचार एवं योगदान पर गहन अकादमिक शोध को प्रोत्साहित करना है।

विदित हो कि इसकी अंतिम तिथि 26 जून 2025, गुरुवार है। छात्रवृत्तियों के चयन, मार्गदर्शन एवं शोध गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु गठित शोध परिषद में प्रतिष्ठित विशेषज्ञ सम्मिलित हैं, जिनमें शामिल हैं –

प्रवीण दीक्षित– अध्यक्ष, सावरकर राष्ट्रीय स्मारक एवं सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी

डॉ. रिजवान कादरी– सदस्य, प्रधान मंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय (पीएमएमएल) सोसाइटी

प्रखर श्रीवास्तव– प्रसिद्ध पत्रकार एवं इतिहासकार

चंद्रशेखर साने– वीर सावरकर विषय के ख्यातनाम विशेषज्ञ

चिरायु पंडित– लेखक, शोधकर्ता और शिक्षाविद

अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए https://tinyurl.com/SSRS 2025 पर सम्पर्क करें।

जनजातीय जीवन मूल्यों की रक्षा से ही होगा समृद्ध राष्ट्र का निर्माण

पश्चिमी दिल्ली के आर्यसमाज मंदिर रानीबाग के सत्संग भवन में श्री अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में विगत दिवस 42वें वैचारिक क्रांति शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने कहा कि जनजातीय समाज के जीवन मूल्यों की रक्षा से ही समरस समाज के साथ समृद्ध राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा।

उन्होंने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम 14 वर्ष के वनवासी जीवन की पूर्णता पर ही भगवान श्रीराम बन पाए। 13 वर्ष के वनवास व एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद ही पांडव महाभारत को जीत पाएं। वनांचल में रहने वाले जनजातीय समाज की समृद्ध प्राचीन परम्पराओं ने ही देश को भगवान बिरसा मुंडा, सिद्धु–कान्हु, टंट्या भील, भीमा नायक, रानी गाइडिनल्यू और लक्ष्मण नायक जैसे अनेक वीर वीरांगनाएं विद्वान व महापुरुष दिए। हमें इन परम्पराओं पर गर्व है।

इस अवसर पर स्थानीय विधायक व भाजपा मंदिर प्रकोष्ठ के संयोजक ने भी अपने विचार रखे तथा संघ के महामंत्री जोगिंद्र खट्टर के साथ समस्त आयोजक टीम व अन्यान्य संगठनों के लगभग 150 बंधु जन भी उपस्थित थे। आचार्य जीववर्धन, स्वामी विश्वामित्र भी मंच पर विराजमान थे तथा भजन गायक विनोद आर्य ने मधुर भजन भी प्रस्तुत किए।

किसन नगर स्थित ठाणे महानगरपालिका स्कूल क्रमांक-1 के 1985 बैच के पूर्व विद्यार्थियों का चालीस साल बाद स्नेह मेला का आयोजन किया गया। उक्त आयोजन वागले एस्टेट गोल्डन नेस्ट होटल में किया गया। इस अवसर पर शानबाग सर, जाधव सर, कोल्हे सर, यादव सर, पंडागले सर, डिकोले मैडम, वर्गे मैडम, साली मैडम, सर्राफ मैडम आदि शिक्षक व शिक्षिकाएं उपस्थित थीं। 40 वर्ष के उपरांत इस भेंट में लोगों ने जमकर गाने व नृत्य का आनंद उठाया।

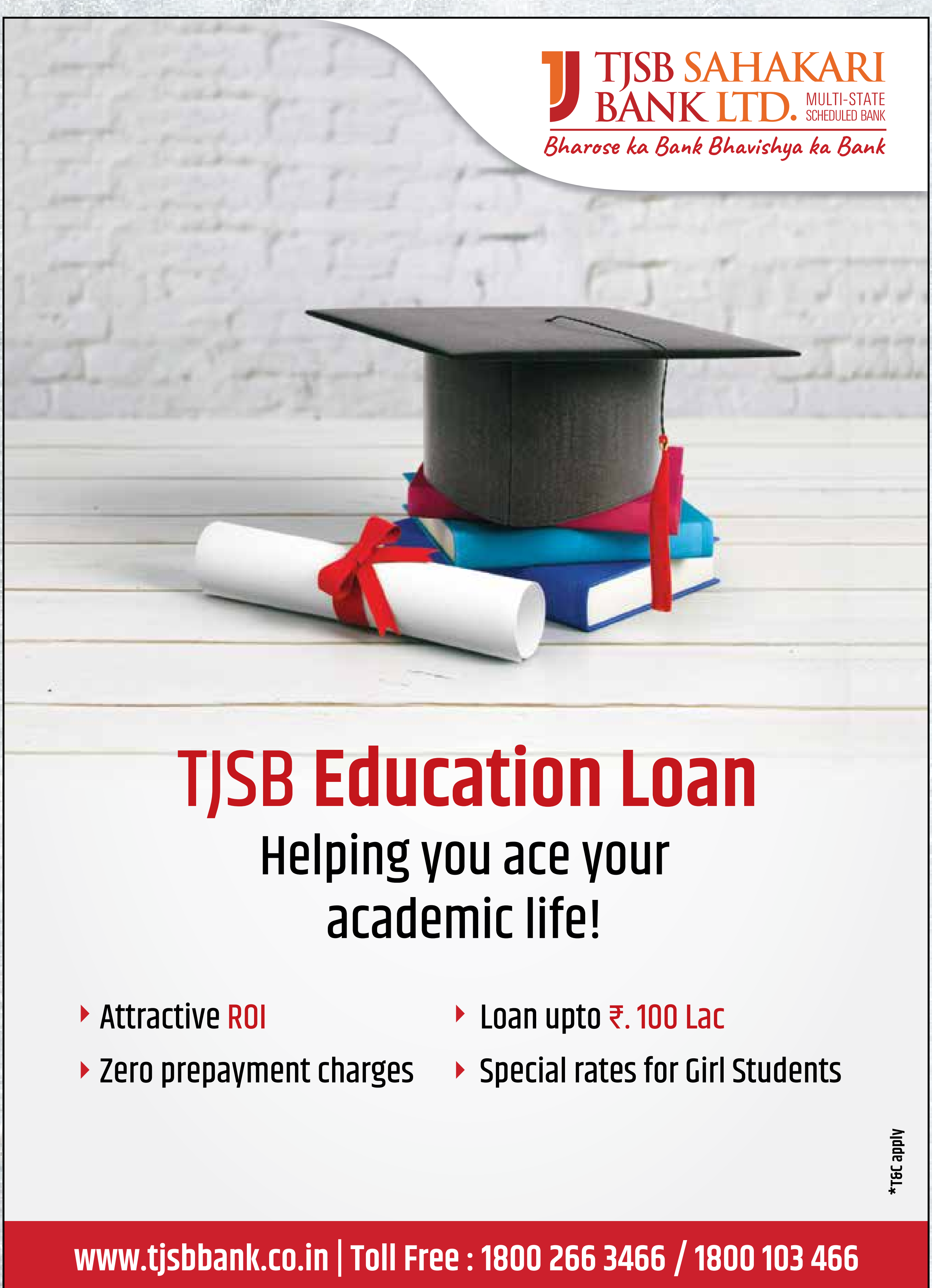
TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
TJSB Education Loan
Helping you ace your academic life!
Attractive ROI
Loan upto ₹. 100 Lac
Zero prepayment charges
Special rates for Girl Students
*T&C apply
www.tjsbbank.co.in | Toll Free : 1800 266 3466 / 1800 103 466